हिन्दी साप्ताहिक

न्यूज आइकॉन

T.C. NO. MAHHIN10172

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला | ईमेल: newsicon2021@gmail.com | मूल्य: रु. - 2/-

वर्षः २ | अंकः २३ | पृष्ठः 8 | शुक्रवार,मुंबई, 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2022

संजय राउत की जमानत पर बांबे हाई कोर्ट ने तत्काल रोक लगाने से किया इनकार

मुंबई। महाराष्ट्र में मुंबई की एक विशेष अदालत ने पात्रा चाल पुनर्विकास परियोजना से जुड़े मामले में बुधवार को शिवसेना सांसद संजय राउत को जमानत दे दी है। इस बीच, ईडी अदालत के आदेश के खिलाफ बांबे हाई कोर्ट पहुंची। हाई कोर्ट ने संजय राउत और प्रवीण राउत की रिहाई पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। ईडी की याचिका पर बांबे हाई कोर्ट में वीरवार को सुनवाई होगी। आर्थर रोड जेल अधिकारी के मुताबिक, रिहाई के आदेश मिलने के दो घंटे बाद संजय राउत जेल से बाहर आ सकते हैं। दस्तावेजों की जांच के बाद उन्हें जेल से रिहा किया जाएगा।ईडी का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वकील ने कहा कि हम जमानत आदेश को रद करने के लिए बांबे हाई कोर्ट में अपील दायर करने की प्रक्रिया में हैं। आदेश पर अंतरिम रोक लगाने की मांग करेंगे। वहीं, संजय राउत के वकील ने कहा कि वे यह सुनिश्चित करने के लिए औपचारिकताएं पूरी करेंगे कि शिवसेना सांसद बुधवार को जेल से बाहर आएं।

करीब 101 दिन से जेल में बंद शिवसेना सांसद संजय राउत को मुंबई की एक विशेष अदालत ने जमानत दे दी है। प्रवर्तन निदेशालय ने गोरेगांव के पात्रा चाल पुनर्विकास मामले से उत्पन्न एक कथित मनी लॉन्ड्रिंग घोटाले के सिलसिले में 31 अगस्त को छापेमारी कर एक अगस्त को राउत को गिरफ्तार किया था। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पिछले सप्ताह धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) से संबंधित मामलों की सुनवाई के लिए नामित विशेष न्यायाधीश एमजी देशपांडे ने आदेश सुरक्षित रख लिया था। प्रवर्तन निदेशालय ने राज्यसभा सदस्य संजय राउत को इस साल 1 अगस्त को उपनगरीय गोरेगांव में पात्रा चाल के पुनर्विकास के संबंध में वित्तीय अनियमितताओं में उनकी कथित भूमिका को लेकर गिरफ्तार किया था।बता दें कि संजय राउत इस समय न्यायिक हिरासत में है और मुंबई के आर्थर रोड जेल में बंद है। राउत ने अपनी जमानत याचिका दाखिल की थी जिस पर ईडी ने राउत की याचिका का विरोध करते हुए कहा था कि उन्होंने पात्रा चाल पुनर्विकास से संबंधित मनी लान्ड्रिंग मामले में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

ईडी की जांच पात्रा चाल के पुनर्विकास और उनकी पत्नी और सहयोगियों से संबंधित वित्तीय लेनदेन में कथित वित्तीय अनियमितताओं से संबंधित है।

भारत जोड़ो यात्रा के 63वें दिन महाराष्ट्र में स्थानीय लोगों से मिले राहुल गांधी

नांदेड़ः कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बुधवार को भारत जोड़ो यात्रा के 63वें दिन की शुरूआत महाराष्ट्र में नादेड़ के बिलोली से की। यहां पर राहुल गांधी कुछ स्थानों पर रुके और स्थानीय लोगों से बातचीत की। प्रेट्र के मुताबिक, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल, महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले, मुंबई पार्टी प्रमुख भाई जगताप, नसीम खान, विश्वजीत कदम और पार्टी के अन्य नेता भी राहुल गांधी के साथ पदयात्रा कर रहे हैं। एआइसीसी महासचिव (संचार) जयराम रमेश, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह और पार्टी नेता कन्हैया कुमार सेवा दल के कार्यकताओं के साथ नजर आए.राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के 62वें दिन मंगलवार को नांदेड़ में एक गुरुद्वारे में माथा टेका था। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर नोटबंदी, बेरोजगारी और नफरत की राजनीति को लेकर निशाना साधा था। कांग्रेस सेवा दल के एक वरिष्ठ पदाधिकारी की मौत के कारण यात्रा का माहौल गमगीन रहा। महाराष्ट्र में बुधवार को भारत जोड़ो यात्रा का तीसरा दिन है।

राहुल गांधी के नेतृत्व में सोमवार रात भारत जोड़ो यात्रा पड़ोसी राज्य तेलंगाना से नांदेड़ के देगलुर में महाराष्ट्र में पहुंची थी।भारत जोड़ो यात्रा बुधवार को सुबह 5.45 बजे बिलोली के रामतीर्थ स्थित शंकरनगर से गोदावरी मनार चीनी मिल मैदान में रात्रि विश्राम के बाद शुरू हुई। कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा सात सितंबर को कन्याकुमारी से शुरू हुई थी। अब तक भारत जोड़ो यात्रा तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना को कवर कर चुकी है। महाराष्ट्र में भारत जोड़ो यात्रा पांच जिलों में 382 किलोमीटर की दूरी तय कर 15 विधानसभा और छह संसदीय क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। राहुल गांधी गुरुवार को नांदेड़ में और 18 नवंबर को बुलढाणा जिले के शेगांव में एक रैली को संबोधित करेंगे। 20 नवंबर को भारत जोड़ो यात्रा मध्य प्रदेश में प्रवेश करेगी।

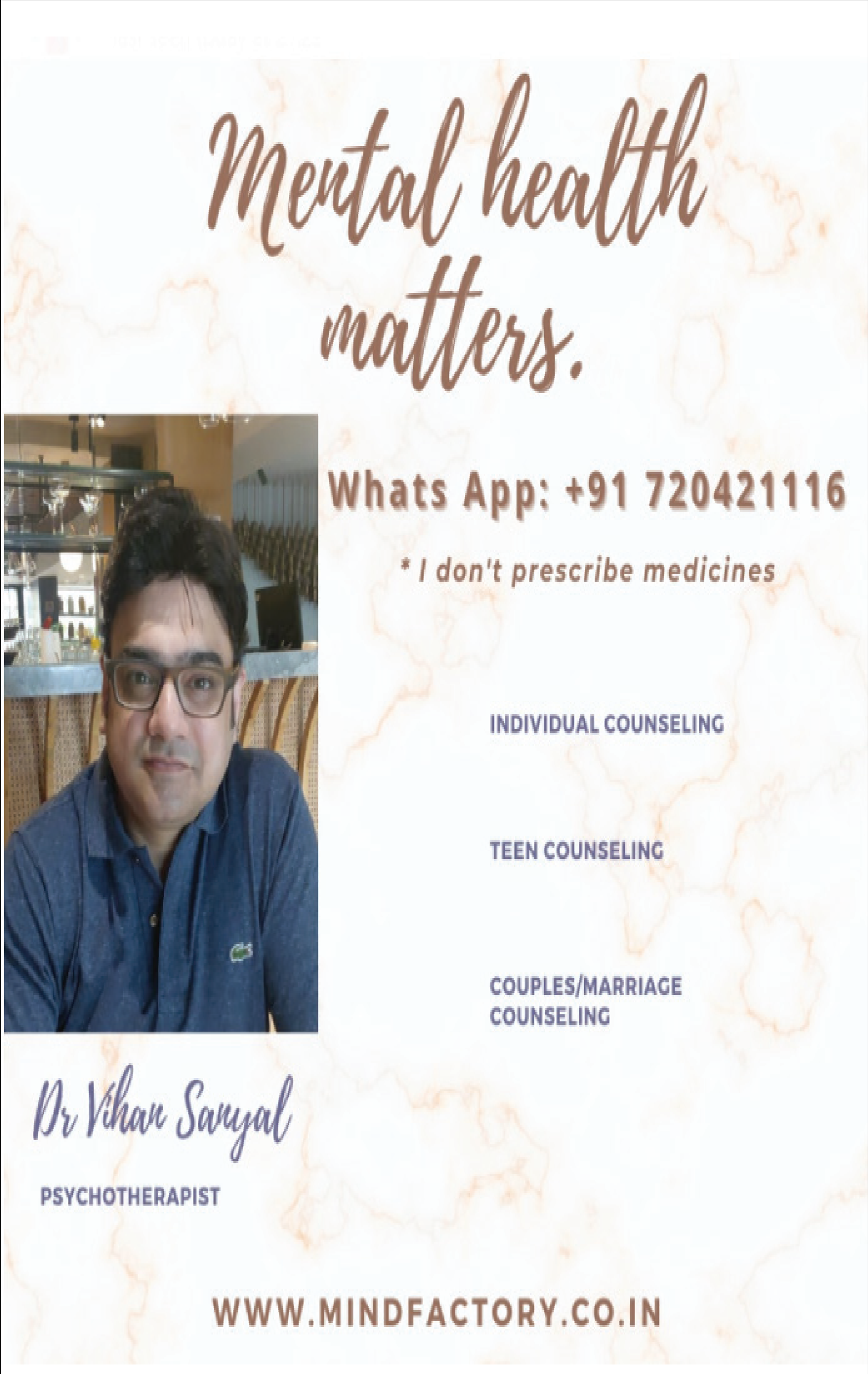

मुंबई में उपचुनाव खत्म होते ही BMC चुनाव का मुद्दा गूंजने लगा

दिनेश शर्मा / मुंबई; अंधेरी पूर्व विधानसभा सीट पर उपचुनाव खत्म ही हुई है कि बृहमुंबई महानगरपालिका यानी इटउ चुनाव का मुद्दा गूंजने लगा है। हालांकि, अभी तक चुनाव की तारीखों का ऐलान नहीं हुआ है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने ऐलान कर दिया है कि बीएमसी में अगले मेयर पार्टी से ही होगा। खास बात ही करीब तीन दशकों से BMC पर शिवसेना का नियंत्रण है।

रविवार को मुंबई भाजपा के प्रमुख अशीष शेलार और मुंबई नॉर्थ सेंट्रल से सांसद पूनम महाजन ने बांद्रा के गवर्नमेंट कॉलोनी ग्राउंट से अभियान की शुरूआत कर दी है। खास बात है कि यह स्थल उद्धव ठाकरे के आवास मातोश्री से कम ही दूरी पर मौजूद है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भाजपा नेताओं का कहना है कि यह उद्धव के लिए सीधा संदेश है। इस मौके पर शेलार ने महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव

ठाकरे पर निशाना साधा और भ्रष्टाचार करने के आरोप लगाए। शेलार ने उद्धव को लेकर कहा, ह्यजिसके वोट चाहे ले लीजिए, न मराठी और न मुस्लिम आपके लिए मतदान करेगा। लेकिन हमारा सवाल है कि ऐसा समय क्यों आया कि आपको जाति और धार्मिक बातों पर वोट मांगना पड़ रहा है। आपका (शिवसेना) 25 सालों से ज्यादा समय तक इटउ पर कब्जा रहा, है न? तो आप क्यों अपने किए हुए काम के आधार पर वोट नहीं मांग रहे हैं। जून में एकनाथ शिंदे की बगावत के बाद तब की शिवसेना में फूट पड़ गई थी। इसके बाद राज्य से महाविकास अघाड़ी की सरकार भी गिर गई। ऐसे में भाजपा को भरोसा है कि शिंदे के नेतृत्व वाली बालासाहेबांची शिवसेना की मदद बीएमसी चुनाव में फायदेमंद हो सकती है। साल 2017 में शिवसेना ने 227 में से 84 सीटों पर जीत हासिल की थी। जबकि, भाजपा 82 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर थी।

M2 का फॉमूर्ला

महाराष्ट्र में शिवसेना के मुखपत्र सामना में मराठी मुस्लिम सेवा संघ और बिल्किस बानो मामले का जिक्र भी चर्चा में है। शेलार का कहना है, ह्यशिवसेना उद्धव बालासाहेब पार्टी मराठी और मुस्लिम वोट जुटाना चाहती है, लेकिन उन्होंने चतुराई से उन्हें मराठी मुस्लिम कह दिया है।ह्ण आंकड़े बताते हैं कि मुंबई में मुस्लिम आबादी 21 प्रतिशत है। जबकि, मराठी भाषी 30 फीसदी हैं।

उद्धव समूह का इनकार

शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) की प्रवक्ता डॉक्टर मनीषा कयांदे का कहना है कि पार्टी कभी भी मुसलमानों के खिलाफ नहीं रही। उन्होंने कहा, ह्यअगर आप बालासाहेब ठाकरे के पुराने भाषण देखेंगे, तो पाएंगे कि वह उनसे (मुसलमानों) नफरत नहीं करते थे। अगर आरएसएस प्रमुख मस्जिद जा सकते हैं और मुसलमानों को लुभा सकते हैं, तो हम क्यों नहीं कर सकते?

हालांकि, वह भी शिवसेना में फूट के बाद बीएमसी चुनाव को कठिन काम बताती हैं। इधर, सितंबर में मुंबई दौरे पर आए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह भी लक्ष्य तय कर चुके हैं। उन्होंने बीएमसी में भाजपा के लिए 150 सीटों का टारगेट बनाया है।

महाराष्ट्र के रायगढ़ में ऑटो रिक्शा पर रेत से भरा डंपर पलटने से चार की मौत

रायगढ़। महाराष्ट्र के रायगढ़ में सड़क हादसे में चार लोगों की जान चली गई। पुलिस के अनुसार देर रात एक ऑटो-रिक्शा पर रेत से भरा डंपर पलट जाने से सड़क दुर्घटना में तीन छात्रों सहित चार लोगों की मौत हो गई। सोमवार रात परीक्षा देकर जब छात्र लौट रहे थे तो उनकी हादसे में मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मलबे में दबे शवों को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया।

बता दें कि यह घटना उस समय हुई जब रायगढ़ में एक ऑटो रिक्शा पर रेत से भरा डंपर पलट गया। ऑटो चालक के साथ परीक्षा देकर लौट रहे तीन छात्रों की मौके पर ही मौत हो गई। महाराष्ट्र सरकार के मंत्री उदय सामंत ने कहा कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मृतकों के परिवारों को पांच-पांच लाख रुपये देने की घोषणा की है।

उद्योग मंत्री एवं रायगढ़ जिले के संरक्षक मंत्री उदय सामंत ने कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मृतकों के परिवारों को पांच लाख रुपये देने की घोषणा की। मामले में विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है।

'भारत जोड़ो यात्रा' के जरिए विपक्षी एकता को भुनाना चाहती है महाराष्ट्र कांग्रेस

मुंबई। महाराष्ट्र कांग्रेस चाहती है कि महाराष्ट्र में राहुल गांधी की ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण में सभी विपक्षी दलों की सहभागिता सामने आए। ताकि राहुल गांधी की यात्रा विपक्षी एकता का प्रतीक बनकर उभरे। ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण सोमवार रात को महाराष्ट्र में प्रवेश कर चुकी है। 2019 के विधानसभा चुनाव के बाद जब शिवसेना ने अचानक भाजपा का साथ छोड़कर कांग्रेस-राकांपा का दामन थामा, तभी से महाराष्ट्र में एक नया राजनीतिक समीकरण महाविकास आघाड़ी के रूप में सामने आ चुका है। समाजवादी पार्टी सहित कुछ और दल भी महाविकास आघाड़ी का हिस्सा रहकर उसकी सरकार को बाहर से समर्थन देते रहे थे। महाराष्ट्र कांग्रेस इस एकता को राहुल गांधी की ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण में भुनाना चाहती है।वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने करीब 15 दिन पहले ही शिवसेना उद्धव बालासाहब ठाकरे के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे

एवं राकांपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद पवार के घर जाकर उनसे भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होने का अनुरोध किया था। उस समय इन दोनों नेताओं ने इसकी स्वीकृति भी दे दी थी। लेकिन दुर्भाग्य से राकांपा नेता शरद पवार का स्वास्थ्य इन दिनों ठीक नहीं चल रहा है।

वह करीब एक सप्ताह मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती रहकर सोमवार को ही बाहर आए हैं। इस बीच वह हेलीकाप्टर से अपनी पार्टी के राज्यस्तरीय मंथन शिविर में भी जाकर आए। लेकिन उनकी यह यात्रा चिकित्सकों की टीम के साथ ही हुई थी। इसलिए कांग्रेस उन्हें राहुल गांधी की यात्रा में ले जाने पर बहुत जोर नहीं दे रही है।

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चह्वाण का कहना है कि शरद पवार का यात्रा में शामिल होना उनके स्वास्थ्य पर निर्भर करेगा। लेकिन राकांपा प्रवक्ता महेश तपासे ने लगभग स्पष्ट कर दिया है कि 10 नवंबर को राकांपा का एक प्रतिनिधि मंडल ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण में शामिल होगा। इसमें राकांपा के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल, सांसद सुप्रिया सुले एवं पूर्व मंत्री जीतेंद्र आह्वाड शामिल रहेंगे।

दूसरी ओर शिवसेना की तरफ से भी स्पष्ट कर दिया गया है कि उद्धव ठाकरे तो ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण में शामिल नहीं होंगे, लेकिन उनके पुत्र एवं युवा सेना के अध्यक्ष आदित्य ठाकरे ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण में जाकर राहुल गांधी से मुलाकात कर सकते हैं। क्योंकि आदित्य ठाकरे स्वयं भी इस समय मराठवाड़ा का ही दौरा कर रहे हैं। बता दें कि तेलंगाना से सोमवार देर रात महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले में प्रवेश के बाद ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ण की औपचारिक शुरूआत मंगलवार को सुबह देगलूर से होगी। महाराष्ट्र में कुल 14 दिन रहने के बाद 20 नवंबर को महाराष्ट्र के भेंडवल से मध्यप्रदेश के बुरहानपुर में प्रवेश कर जाएगी।

संपादकीय

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला

राज्यपाल से टकराव का सिलसिला

दक्षिण के दो राज्यों (तमिलनाडु और केरल) की सरकारें अपने-अपने राज्यपालों से दो-दो हाथ कर रही हैं। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक ने राज्यपाल आर एन रवि को हटाने के लिए एक याचिका तक दायर कर दी है, जबकि केरल में राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को सत्ताधारी माकपा आरएसएस व भाजपा की कठपुतली बता रही है। यहां तो लगभग सभी दलों का मानना है कि राज्यपाल असांविधानिक तरीके से काम कर रहे हैं।

निर्वाचित राज्य सरकारों और केंद्र सरकार के प्रतिनिधियों (राज्यपाल) के बीच टकराव दशकों पुराना मसला है। पारंपरिक रूप से राज्यपाल तब सुर्खियों में आते थे, जब राज्यों में सरकार के गठन में अड़चन आती थी, खासतौर से तब, जब खंडित जनादेश आता था। अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग को लेकर भी राज्यपालों की भूमिका पर सवाल उठते थे, जिसके तहत वे चुनी गई राज्य सरकार को बर्खास्त कर सकते थे और केंद्रीय शासन लगा सकते थे। हालांकि, यह स्थिति 1994 में एस आर बोम्मई बनाम भारत संघ के फैसले के बाद बदल गई। अब राज्य सरकारों को कोई केंद्र सरकार अपनी मर्जी से बर्खास्त नहीं कर सकती। मगर अब केंद्र और राज्यों के संबंधों ने एक अलग मोड़ ले लिया है।

दरअसल, उन राज्यों में, जहां केंद्र का विरोध करने वाली पार्टियों की सरकार है, एक दिन भी ऐसा नहीं बीतता, जब राज्य सरकार पर राज्यपाल निशाना न साधते हों, और जवाब में मुख्यमंत्री व उनके मंत्रिमंडल के साथी मैदान में न उतर आते हों। केरल में तो कुलपतियों की नियुक्ति को लेकर राज्यपाल व राज्य सरकार के बीच टकराव इस कदर बढ़ गया है कि इसका असर अब विश्वविद्यालयों के दैनिक कामकाज पर दिखने लगा है। शिक्षाविदों को डर है कि यदि यह तनातनी यूं ही जारी रही, तो विश्वविद्यालयों की बेहतर पठन-पाठन संबंधी रैंकिंग प्रभावित हो जाएगी।

केरल और तमिलनाडु की सरकारों को जो बातें परेशान कर रही हैं, वे हैं राज्यपालों के बयान। राज्यपालों के शब्दों से भी जान पड़ता है कि उनका मकसद या तो केंद्र सरकार को खुश करना है या भाजपा की विचारधारा को आगे बढ़ाना।

तमिलनाडु में विवाद तब गहरा गया, जब राज्यपाल आर एन रवि ने कहा कि हर देश का एक धर्म होता है और भारत इसका अपवाद नहीं है। द्रमुक ने इस बयान को संविधान की भावना के खिलाफ माना। राज्यपाल के खिलाफ मोर्चा खोल दिया गया, क्योंकि उन्होंने सनातन धर्म या समावेशी हिंदू धर्म की सराहना की थी। वरिष्ठ द्रमुक नेताओं ने यह कहकर हमला बोला कि सांविधानिक प्रमुख के रूप में कार्यरत राज्यपाल को धार्मिक मुद्दों पर अपनी राय नहीं जाहिर करनी चाहिए, भले यह उनका नितांत निजी मामला हो सकता है। राज्यपाल रवि उस वक्त भी आलोचना के घेरे में आ गए, जब उन्होंने तमिल शास्त्रीय ग्रंथ तिरुक्कुलर के ह्यआध्यात्मिक पहलुओंह्न को ह्यनिहित स्वार्थोंह्न द्वारा जान-बूझकर कमतर किए जाने का आरोप लगाया, जिसे द्रमुक ने खुद पर हमला माना।

उधर, केरल में साल की शुरूआत से ही राज्यपाल के साथ राज्य सरकार की तनातनी शुरू हो गई थी। उस वक्त उन्होंने कृषि विधेयक पर चर्चा के लिए विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने में देरी की थी, जिसे बाद में केंद्र ने वापस भी ले लिया।

आखिर हमने क्यों शुरू किया आरक्षण

सोमवार को अपने आदेश में सर्वोच्च अदालत ने गरीब सवर्णों को आरक्षण देने संबंधी कार्यपालिका के आदेश की वैधानिकता तय कर दी। मगर इस फैसले के कई पहलू ऐसे हैं, जिन पर स्थिति अब भी स्पष्ट नहीं है। चिंता की बात यह भी है कि आरक्षण को लेकर समाज का दृष्टिकोण तेजी से बदल रहा है और समाज विज्ञानियों के अलावा शायद ही कोई अन्य आरक्षण व्यवस्था का तार्किक, दार्शनिक और नैतिक आधार जानता है।

हमारे मुल्क में जो सामाजिक व्यवस्था है, उसमें किसी भी अन्य देश की तरह कुछ ताकत के कारक हैं, तो कुछ दोष के। इन गड़बड़ियों को दूर करने की जिम्मेदारी आजादी के बाद की पीढ़ी की थी और इसके लिए संविधान नामक मार्गदर्शक दस्तावेज भी बनाया गया। इसमें उन वर्गों और समुदायों के लिए विशेष अवसर के प्रावधान किए गए, जिनको हम वंचित कहते हैं। अपने देश में भेदभाव के चार आधार रहे हैं- लिंग भेद, जाति भेद, गरीबी-अमीरी और धर्म या धार्मिक बहुसंख्यक। आरक्षण की व्यवस्था इसीलिए की गई कि जो लोग पीछे हैं या जिन लोगों के पांवों में हमने परंपराओं की जंजीर बांध रखी थी, वह जंजीर राजनीतिक समानता पैदा करने से तो टूट गई, लेकिन आर्थिक व सामाजिक समानता के लिए उनमें नेतृत्व-निर्माण और क्षमता-विस्तार भी आवश्यक था। क्षमता-विस्तार के लिए शिक्षा के अधिकार की जरूरत थी, तो नेतृत्व-निर्माण के लिए आरक्षण की। आज यदि गरीबी का समाधान भी आरक्षण में खोजा जा रहा है, तो यह संविधान की प्रतिकूल व्याख्या ही कही जाएगी।

गरीबी दूर करने के लिए रोजगार के अधिकार की आवश्यकता है, आरक्षण की नहीं। फिर, आरक्षण की विडंबना है कि यह सिर्फ सरकारी क्षेत्र में लागू है और पिछले तीन दशकों से यह क्षेत्र सिमट रहा है एवं निजी क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। यही कारण है कि आज आरक्षण के कारण हम नई पीढ़ी को ऐसा कागजी फूल दे रहे हैं, जो न रखने लायक है और न फेंकने लायक। जिनको आरक्षण

मिला है, उनमें भी बेरोजगारी कमोबेश उतनी ही है, जितनी आरक्षण से वंचित तबके के बच्चों में। फिर भी, सवर्णों में आरक्षण को लेकर एक तनाव है, जबकि सच्चाई यह है कि देश में रोजगारहीन विकास का मॉडल खड़ा किया गया है, जिससे पार पाने का तरीका यही है कि हम आजीविका को बुनियादी अधिकार बनाएं। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की पिछली केंद्र सरकार ने ग्रामीण भारत के लिए रोजगार की व्यवस्था करके इसका उपाय निकालने का प्रयास किया था, जिसके बाद भारत की राजसत्ता कम से कम गांवों में बेरोजगारों के साथ खड़ी दिखती है। पिछले दिनों नगरों में भी रोजगार की गारंटी देने वाली योजना की शुरूआत राजस्थान की सरकार ने की है, जिसका असर देर-सबेर अन्य प्रदेशों पर भी पड़ेगा, क्योंकि रोजगारहीन नागरिकता निरर्थक होती है।

यही वजह है कि ईडब्ल्यूएस आरक्षण पर सर्वोच्च अदालत का ताजा फैसला विडंबनापूर्ण है। वैसे भी, आरक्षण की जो मयार्दा कुछ साल पहले नौ जजों की बेंच ने तय की थी, एक तरह से उस पर भी पांच जजों की पीठ ने निर्णय दिया है। यह समझना होगा कि 50 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था इसलिए नहीं की गई थी कि इसकी एक सीमा होनी चाहिए। ऐसा दरअसल इसलिए किया गया था कि यदि कुछ सक्षम लोग अपनी ज्ञान-शक्ति के आधार पर देश चलाएंगे, तो कुछ लोगों को विशेष अवसर देकर क्षमता-निर्माण का अवसर दिया जाना चाहिए। इस मयार्दा से मंडल आयोग के समर्थक अब तक नाराज हैं। तमिलनाडु ने भी अपने यहां जो व्यवस्था दी है, उसे अदालत को काफी पहले सुलझा लेना चाहिए था। ऐसा न करने के कारण और तय सीमा से अधिक आरक्षण की व्यवस्था तमिलनाडु की प्रतिभाओं को सिलिकॉन वैली पहुंचा चुकी है। जाहिर है, आरक्षण एक समाज वैज्ञानिक उपकरण है, जिसका इस्तेमाल अब राजनीति के माहिर खिलाड़ी करने लगे हैं।

यहां मेरी मंशा न्यायमूर्तियों के विवेक पर सवाल उठाने की कतई नहीं है। वे सब गुणी हैं, पर यह सवाल भी गलत नहीं कि जिस मुद्दे पर नौ जजों की बेंच ने एक निर्देश जारी किया था, क्या उसे पांच जजों की पीठ ने महत्वहीन नहीं बना दिया? संविधान की आत्मा तो यही कहती है कि जो लोग सामाजिक व शैक्षणिक रूप से कमजोर हैं, उन्हीं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जाए, और जो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हैं, उनके लिए नियोजन की। जब देश के करीब 80 करोड़ लोग इतने सक्षम नहीं कि वे अपने लिए दो वक्त का अनाज जुटा सकें और सरकार से खाद्यान्न मिलने की उम्मीद लगाए हुए हों, तब आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों के इस आरक्षण का भला क्या मतलब है?

अपने देश में हर साल 1.5 करोड़ नौजवान श्रम बाजार में उतरते हैं, जबकि हमारी क्षमता महज 25-35 लाख रोजगार सालाना पैदा करने की है। स्पष्ट है, करीब सवा करोड़ के इस अंतर की भरपायी आरक्षण से नहीं हो सकती। इसके लिए हमें रोजगार आधारित नियोजन की जरूरत है। मगर वोट-बैंक के लिए जिस दलदल में देश को धंसाया जा चुका है, उससे पार पाने में शीर्ष अदालत का फैसला सक्षम नहीं है।

देश की प्रगति की प्रक्रिया में जो लोग पीछे छूट गए हैं, उनको साथ लेकर चलना राजसत्ता का हमेशा लक्ष्य होना चाहिए, तभी समावेशी विकास होगा। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कथन है, जबकि प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अनेकता में एकता की बात कही थी। यानी, इस मामले में नेहरू और मोदी समान धरातल पर हैं। इसीलिए सबसे पहले आरक्षण उसे मिलना चाहिए, जो दिव्यांग हैं, फिर जिस घर में कमाने वाले पुरुष का देहांत हो चुका हो, इसके बाद भौगोलिक रूप से मुश्किलों से जूझने वाले लोगों को और अंत में, जाति या संख्या बल से पीड़ित जरूरतमंदों को। ईडब्ल्यूएस आरक्षण की व्यवस्था संविधान के तहत नहीं, वोट-बैंक के लिए की गई और अदालत ने इसे जारी रखकर एक तरह से निराश ही किया है। हम आशा करते हैं कि प्रधान न्यायाधीश पूर्ण सांविधानिक पीठ का गठन करके तमाम उलझनों को दूर करेंगे, जबकि शासन देश के जाने-माने समाज विज्ञानियों का आयोग बनाकर आरक्षण व्यवस्था की मयार्दा बचाने के उपाय तलाशेगा। आरक्षण नीति की समीक्षा मौजूदा वक्त की जरूरत है। टुकड़े-टुकड़े में इसके बारे में फैसला कतई देशहित में नहीं है।

कार्तिक की सांझ, दीपों के साथ वाराणसी में गंगा घाटों पर उतरा पूनम का चांद

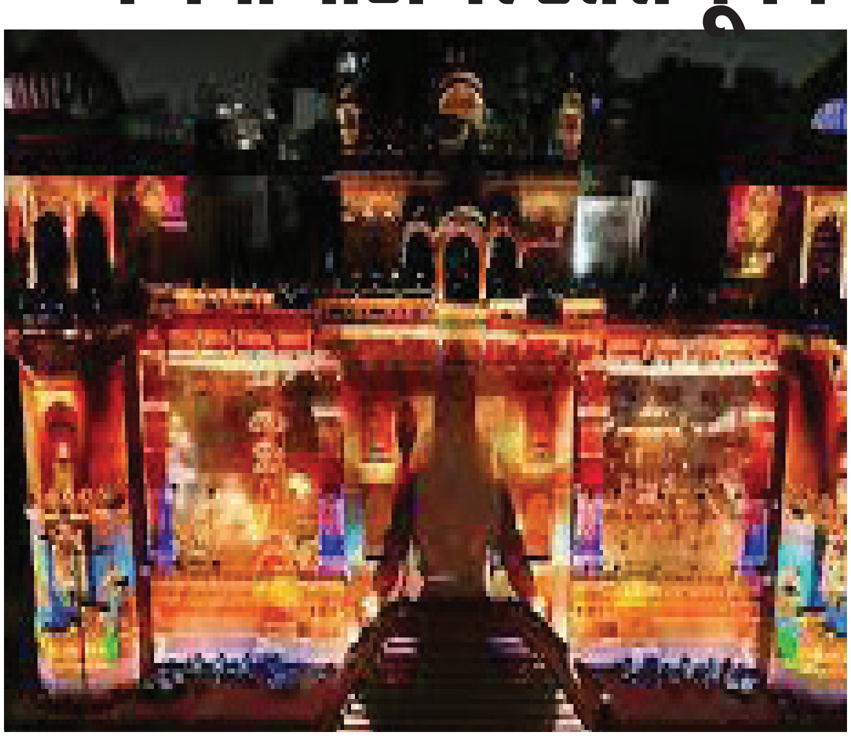

वाराणसी : कार्तिक मास की इस साल की आखिरी सांझ में एक ओर सूरज अस्ताचल को चले और गंगा तट पर असंख्य दीपमाला की रोशनी में भागीरथी की लहरें आह्लादित हो उठीं। आज त्रिपुर राक्षस पर देवों की विजय का पर्व देव दीपावली है। तभी तो देवाधिदेव महादेव की नगरी काशी में सूरज के मद्धिम होते ही हर गली में स्वमेव आमंत्रित लोग भक्ति भाव में डूबे तेज कदमों से उत्सव का साक्षी बनने जाह्नवी तट की ओर भागे जा रहे हैं।शाम साढ़े पांच बजे पंचगंगा घाट का हजारा दीप स्तंभ आलोकित होते ही गंगा के घाटों पर असंख्य दीप एक साथ जल उठे। उत्तरवाहिनी गंगा का विस्तृत पाट जगमग होकर इठलाने लगा।

उधर, रवि किरणें अस्त हुईं और इधर घनीभूत भारत गंगा तट पर परंपरा के दीपों की माला बनाए झूमने लगा।

घाटों पर मां गंगा की आज विशेष आरती हो रही है। दशाश्वमेध घाट का ध्श्य है- बटुक और अर्चक मंत्रोच्चार कर रहे हैं। कन्याएं चंवर डोला कर सृष्टि की मंगल कामना के गीत गा रही हैं। घंटा-घडि ाल, डमरू-शंख, झाल-मृदंग समेत अन्य वाद्य यंत्रों की डमक-टनकार से दिशाएं गूंज रही हैं।

राजा चेतसिंह व अन्य घाटों पर लेजर शो की किरणें गंगा में इंद्रधनुष बना रही हैं। आज सुबह से ही एयरपोर्ट पर डमरू दल और अन्य लोक कलाकारों के अभिनंदन से बनारस आए मेहमान स्नेह सिंचित हैं। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम पहली बार गंगधार से एकाकार हुआ है। इसके साथ ही बैकुंठ चतुर्दशी यानी काशी विश्वनाथ मंदिर प्रतिष्ठा दिवस का संयोग बना है। इससे उल्लास का आयतन और भी घना है।

बाबा धाम 80 लाख रुपये के फूलों से सजधज कर सुवासित है। ठीक सामने रेती में संगीतमय इंद्रधनुष बाहें फैलाए हरित आतिशबाजी से गंगा के आकाशगंगा से मिलन का ओज भर रहा है। देश-दुनिया से पहुंचे लोग नदी में सजीं नावों और बैलून-फूलों से सजे बजड़ों से इस दृश्यावली को मन मंदिर में सहेज लेने को करीब सात किलोमीटर

गुजरात में वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव, असदुद्दीन ओवैसी थे निशाने पर! ट्रेन की खिड़की के शीशे टूटे

सूरतः गुजरात में वंदे भारत एक्सप्रेस पर पथराव होने की बात सामने आई है। ट्रेन की खिड़की के शीशे पर कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने पत्थर फैंके हैं जिसमें एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी सवार थे। पार्टी नेता वारिस पठान ने दावा किया कि आरोपियों के निशाने पर ओवैसी ही थे। पठान ने दावा किया कि एआईएमआईएम प्रमुख पार्टी गुजरात प्रदेश अध्यक्ष साबिर काबलीवाला और पार्टी के अन्य नेताओं के साथ अहमदाबाद से सूरत के लिए ह्यवंदे भारत एक्सप्रेसह्ल में यात्रा कर रहे थे, तभी यह घटना घटी।अक्टक्ट नेता वारिस पठान ने टूटी खिड़की के शीशे की तस्वीरें साझा करते हुए ट्वीट किया कि बीते दिन जब असदुद्दीन ओवैसी, सबीर कबलीवाला और हमारी टीम अहमदाबाद से सूरत के लिए ह्यवंदे भारत एक्सप्रेसह्ल ट्रेन में यात्रा कर रहे थे तो कुछ अज्ञात लोगों ने पथराव कर कांच तोड़ दिया। उन्होंने इसी के साथ दावा किया की यह पथराव जानकर ओवैसी पर किए गए।

गुजरात में एक जनसभा को संबोधित करते हुए, पठान ने दावा करते हुए कहा कि जिस कोच में असदुद्दीन ओवैसी बैठे थे, उस पर दो बार पथराव किया गया। उन्होंने कहा कि हमने वंदे भारत एक्सप्रेस में आज अहमदाबाद से सूरत की यात्रा की। जब हम गंतव्य से 20 से 25 किमी दूर थे, तब पथराव किया गया, जिससे खिड़की का शीशा क्षतिग्रस्त हो गया। ओवैसी कोच में बैठे थे। पठान ने कहा कि आप पथराव से हमारे अधिकारों के लिए हमारी आवाज कभी नहीं दबा सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस साल 30 सितंबर को गांधीनगर-मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को गांधीनगर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था।

प्रधानमंत्री मोदी आज भारत की जी20 की अध्यक्षता के लोगो, थीम और वेबसाइट का करेंगे अनावरण

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज भारत की जी20 की अध्यक्षता के लोगो, थीम और वेबसाइट का अनावरण करेंगे। विदेश मंत्रालय ने जानकारी देते हुए कहा कि जी20 की अध्यक्षता भारत को अंतरराष्ट्रीय महत्व के महत्वपूर्ण मुद्दों पर वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगी। मंत्रालय ने कहा कि देश की जी20 की अध्यक्षता के ये लोगो, थीम और वेबसाइट भारत के संदेश और दुनिया के प्रति उसकी व्यापक प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करेंगे।1 दिसंबर से इंडोनेशिया से जी20 की अध्यक्षता पाएगा भारत भारत एक दिसंबर से इंडोनेशिया से जी20 की अध्यक्षता ग्रहण करेगा। जी20 या 20 देशों का समूह दुनिया की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर सरकारी मंच है। इसमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) शामिल हैं।विदेश मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री आठ नवंबर को शाम 4 बजकर 30 मिनट पर वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए भारत की जी 20 की अध्यक्षता के लोगो, थीम और वेबसाइट का अनावरण करेंगे। जी20 शिखर सम्मेलन

15-16 नवंबर को बाली में होगा और मोदी समेत शीर्ष नेताओं का इसमें शामिल होना तय है। विदेश मंत्रालय ने कहा, ,्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से निर्देशित, भारत की विदेश नीति वैश्विक मंच पर नेतृत्व की भूमिका निभाने की दृष्टि से उभर रही है। मोदी ने कहा, आप सभी को पता है कि मैंने कार्यकर्ता के तौर पर लंबा समय पंजाब में बिताया। वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का एक अनूठा अवसरमंत्रालय ने कहा कि इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में भारत एक दिसंबर से जी20 की अध्यक्षता ग्रहण करेगा। जी20 की अध्यक्षता भारत को अंतरराष्ट्रीय महत्व के महत्वपूर्ण मुद्दों पर वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगी। जी20 अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का एक प्रमुख मंच है, जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व की लगभग दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करता है।

सलमान खान के परिवार से नए सदस्य की होगी फिल्मों में एंट्री

भतीजा अरहान का है बॉलीवुड में आने का प्लान!

नई दिल्लीः सलमान खान के परिवार से नए सदस्य की बॉलीवुड इंडस्ट्री में एंट्री होने वाली है। अरबाज, सोहेल और सलमान के बाद अब अरबाज के बेटे अरहान के बॉलीवुड में एंट्री का इंतजार किया जा रहा है। वैसे बता दें कि अब तक सलमान ने कई एक्टर्स को लॉन्च किया है। तो हो सकता है कि आने वाले समय में सलमान, अपने भतीजे को भी लॉन्च करें। अरहान के बारे में बता दें कि हाल ही में शो द फैबुलस लाइव्स ऑफ बॉलीवुड वाइव्स में नजर आए थे। हालांकि उनका सीन काफी कम था। लेकिन फैंस को पसंद आया था। अब अरबाज से हाल ही में उनके बेटे के एक्टिंग करियर के बारे में सवाल पूछा तो उन्होंने बताया कि क्या अरहान का इस इंडस्ट्री में काम करने का मन है कि नहीं और वह क्या खुद भी चाहते हैं कि अरहान फिल्मों में काम करें या नहीं।

अरबाज ने पिंकविला से बात करते हुए कहा कि फिलहाल अरहान ने अपनी ऐसी कोई इच्छा जाहिर नहीं की है। फिलहाल हम सभी के लिए ये जरूरी है कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करें। वह अभी करियर को लेकर डिसीजन लेने के लिए काफी छोटे हैं। पहले वह पढ़ाई पूरी कर लें फिर देखते हैं कि उनका क्या इंट्रेस्ट है। ऐसा लगता है कि वह इस इंडस्ट्री का हिस्सा बनना चाहते हैं और प्रोडक्शन, एक्टिंग या फिर डायरेक्टिंग में करियर बनाएं। उनका फिल्मी दुनिया की तरह झुकाव है। हम वो लोग भी नहीं हैं कि उन्हें फोर्स करें कि उन्हें कहां करियर बनाना चाहिए। वह जिसमें कम्फर्टेबल होंगे वो करेंगे और हम उनका सपोर्ट करेंगे। फिलहाल मैं इस बारे में ज्यादा नहीं सोच रहा हूं। मैं बस उन्हें जिंदगी को अच्छे से एंजॉय करने देना चाहता हूं और साथ ही चाहता हूं कि वह अच्छी पढ़ाई करें। मलाइका के साथ अपने रिश्ते पर भी अरबाज ने बात की। उन्होंने कहा, हम दोनों बतौर अलग-अलग इंसान बड़े हुए हैं। हम एक-दूसरे की चीजों को अब और एक्सेप्ट करते हैं। हम दोनों अपनी लाइफ में मूव ऑन कर चुके हैं। अब मैं उनकी कई चीजों को एक्सेप्ट करता हूं और वह मेरी चीजों को। लेकिन हमारा एक कॉमन इंट्रेस्ट हैं और वह है हमारा बेटा। हम नहीं चाहते कि हमारी किसी वजह से अरहान को दिक्कत हो।

अरबाज अब वेब सीरीज तनाव में नजर आने वाले हैं। इसके अलावा वह पटना शुक्ला फिल्म लेकर आएंगे जिसमें वह बतौर प्रोड्यूसर काम कर रहे हैं। फिल्म में रवीना टंडन, सतीश कौशिक, मानव विज और चंदन रॉ अहम किरदार में हैं। इस साल के अंत तक इस फिल्म की शूटिंग पूरी हो जाएगी। वहीं कुछ दिनों पहले अरबाज ने यह भी कन्फर्म किया है कि वह दबंग 4 को सलमान खान के साथ लेकर आ रहे हैं।

अमिताभ बच्चन ने सबके सामने किया बड़ा खुलासा

बताया जब जया होती हैं रोमांटिक मूड में तो क्या करती हैं

नई दिल्लीः अमिताभ बच्चन अपने शो कौन बनेगा करोड़पति में कंटेस्टेंट्स के साथ खूब मस्ती करते हैं। वह उनके साथ उनकी पर्सनल लाइफ के बारे में पूछते हैं तो वहीं अपनी पर्सनल लाइफ के बारे में भी बात करते हैं। अब अमिताभ ने हाल ही में शो के दौरान बताया कि जब जया बच्चन रोमांटिक फील करती हैं तो उनके साथ क्या करती हैं। बिग बी की इस बात को सुनकर कंटेस्टेंट और दर्शक भी हैरान रह गए। दरअसल, शो का प्रोमो आया है जिसमें बिग बी सामने बैठे कंटेस्टेंट्स से पूछते हैं कि क्या वह कुक बन सकते हैं। तो कंटेस्टेंट ने कहा कि अगर वह किचन में जाते हैं तो उनकी पत्नी उन्हें बाहर कर देती हैं तो कहती है कि मेरी किचन में नो एंट्री है। इसके बाद बिग बी ने उनसे पूछा कि उनकी पत्नी उनके लिए क्या खाना बनाती है? तो वह कहते हैं कि उनकी पत्नी उनके लिए सब बनाती है। हमारी लड़ाई भी होती है तो भी वह लंच में मुझे नोट्स लिखकर देती हैं। वह लिखती हैं कि मेरे मफिन के लिए मफिन। बिग बी दोनों के रोमांस के बारे में सुनकर हंसते हैं।फिर कंटेस्टेंट ने बिग बी से पूछा कि जया बच्चन भी क्या उनके लिए लव नोट्स भेजती हैं? तो बिग बी ने कहा, सर चिट्ठी नहीं मिलती है पर जिस दिन प्रेम प्रेव हो उस दिन बहुत प्यार से जो चीज हमको अच्छी लगती हो वो अपने हाथ से हमारे मुंह में डाल देंगी। बिग बी की बात सुनकर दर्शक हंसने लगते हैं और तालियां बजाते हैं।बता दें कि बिग बी और जया की शादी साल 1973 में हुई थी और दोनों के 2 बच्चे अभिषेक बच्चन और श्वेता हैं। दोनों के नाति-पोती नव्या, अगस्त्या और आराध्या भी हैं। जया ने इससे पहले नव्या के पॉडकास्ट व्हट द हेल नव्या में बताया था कि शादी से पहले बिग बी ने जया के सामने एक शर्त रखी थी। उन्होंने बताया था कि बिग बी नहीं चाहते थे कि उनकी पत्नी 9 से 5 बजे वाली जॉब करें। वह चाहते थे कि जया काम तो करें, लेकिन रोज नहीं। उन्होंने यह भी बताया था कि बिग बी चाहते थे कि वह उन्हीं फिल्मों में काम करें जो सही लोगों के साथ हों। बता दें कि बिग बी और जया की शादी जया बच्चन की दादी के घर हुई थी। दोनों की शादी भी अचानक हुई थी।

डायबिटीज रोगी महिलाओं को जल्दी हो जाता है मेनोपॉज

डायबिटीज जैसी गंभीर बीमारी पहले बड़े उम्र के लोगों में देखी जाती थी, लेकिन अब ये बहुत छोटी उम्र के बच्चों को भी परेशान कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक, देश में हर 10 में से एक व्यक्ति को डायबिटीज है। इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत में 2021 तक 77 मिलियन से ज्यादा डायबिटीज के मरीज हैं और 2030 तक ये आंकड़ा 100 मिलियन तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि भारत को दुनिया की डायबिटीज की राजधानी कहा जाता है। पुरुषों के मुकाबले डायबिटीज के मामले महिलाओं में उम्र से पहले देखे जाते हैं। डायबिटीज से जूझ रही महिलाओं पर हुई एक रिसर्च में ये बात सामने आई है कि उन्हें आम महिलाओं से जल्दी मेनोपॉज हो जाता है। कनाडा के शोधकर्ताओं द्वारा कॉम्प्रेहेन्सिव स्टडी के व्यापक समूह के डेटा का उपयोग किया गया और इसमें मधुमेह के प्रीमेनोपॉजल निदान वाली महिलाओं को शामिल किया गया। विश्लेषण में 11,436 महिलाएं शामिल थीं, जिनका वजन 45-85 वर्ष की आयु की 1474,412 कनाडाई महिलाओं की आबादी का प्रतिनिधित्व करने के लिए था। इस रिसर्च के सामने आने के बाद डायबिटीज से पीड़ित महिलाओं के मन में एक ही सवाल है कि क्या उन्हें आम महिलाओं से जल्दी मेनोपॉज हो जाता है।

विराट कोहली और सूर्यकुमार यादव के सहारे है टीम इंडिया, ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर ने दिया दिलचस्प जवाब

नई दिल्ली। आइसीसी इवेंट के नॉक-आउट मुकाबले में भारत को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा है। टी20 वर्ल्ड कप 2022 के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में इंग्लैंड ने भारत को 10 विकेट से करारी मात दी है। इस टूर्नामेंट में सलामी बल्लेबाज केएल राहुल और रोहित शर्मा का प्रदर्शन काफी साधारण रहा। विराट कोहली और सूर्यकुमार यादव को छोड़कर किसी भी बल्लेबाजों ने लगातार अच्छे प्रदर्शन नहीं किए।

मैच हारने के बाद यह सवाल पूछा जा रहा है कि क्या इस टूर्नामेंट में टीम इंडिया, कुछ ज्यादा ही विराट कोहली और सूर्यकुमार यादव पर निर्भर नहीं हो गई थी। इस सवाल का जवाब ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज डेविड हसी ने दी है। डेविड हसी ने कहा, ह्यमैं यह नहीं कहूंगा की टीम इंडिया ज्यादा ही विराट कोहली और सूर्यकुमार यादव पर निर्भर है। उनके पास सलामी बल्लेबाज, विकेटकीपर दिनेश कार्तिक जैसे कई अद्भुत खिलाड़ी हैं। उनके पास एक अच्छा तेज आक्रमण और अच्छी स्पिन गेंदबाज भी है और मुझे लगता है कि भारत की टीम काफी संतुलित है। इसके अलावा उनके पास राहुल द्रविड़, पैडी अप्टन जैसे कोचिंग स्टाफ भी मौजूद है। हसी ने कहा, ह्यसूर्यकुमार यादव ने इस टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया है। ऐसा लग रहा है कि उन्होंने शायद एबी डिविलियर्स की जगह ले ली है। सूर्यकुमार की सबसे अच्छी बात यह है कि उनके अंदर एक शानदार प्रतिभा है। उन्हें बैटिंग करते हुए देखना काफी अच्छा लगता है। वो सफलता की ओर अग्रसर हैं, जिसका वाकई वो हकदार हैं।ह्नउनसे जब यह सवाल पूछा गया कि वाकई सूर्यकुमार यादव एक 360 डिग्री प्लेयर हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए हसी ने कहा,ह्यहाँ, क्यों नहीं मुझे लगता है कि खिलाड़ी अब 360 डिग्री खेलने से डरते हैं क्योंकि उन्हें मैदान के चारों ओर खेलना पड़ता है।

साउथ अफ्रीका के बाद वर्ल्ड क्रिकेट का दूसरा चोकर्स बना भारत, वजह भी है दमदार

नई दिल्ली। विश्व क्रिकेट का सबसे बड़ा चोकर्स साउथ अफ्रीका को माना जाता है और वजह सबको पता है। टी20 वर्ल्ड कप 2022 में भी साउथ अफ्रीका क्रिकेट टीम के पास एक बड़ा मौका था कि वो नीदरलैंड को हराकर सेमीफाइनल में पहुंच सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और उसे हार के साथ इस वर्ल्ड कप से रुखसत होना पड़ा। प्रोटियाज टीम ने एक बार फिर से अपने ऊपर लगे चोकर्स के दाग को नहीं धो पाई बल्कि उसे और गहरा ही कर लिया, लेकिन अब इस कैटेगरी में भारतीय टीम भी आती जा रही है।

वैसे तो भारतीय टीम ने 1983 और 2011 में वनडे वर्ल्ड कप खिताब जीता था साथ ही इस टीम ने 2007 में टी20 वर्ल्ड कप खिताब पर भी कब्जा किया था, लेकिन 2013 में धौनी की कप्तानी में चैंपियंस ट्राफी खिताब जीतने के बाद टीम इंडिया के आइसीसी खिताब पर मानो ब्रेक सा ही लग गया है। 2013 के बाद लगभग हरे बड़े टूर्नामेंट के सेमीफाइनल और फाइनल में भारत को लगातार हार ही मिल रही है और इससे उसके ऊपर भी चोकर्स का ठप्पा लगना शुरू हो गया है।

भारत ने अपना आखिरी आइसीसी खिताब साल 2013 में जीता था और इसके बाद टीम इंडिया ने 7 बार आइसीसी खिताब गंवाया है वो भी बेहद करीब पहुंचकर। साल 2014 में भारतीय टीम ने टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में जगह बनाई थी, लेकिन उसे हार मिली तो वहीं 2015 वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में भारत को निराश होना पड़ा। फिर 2016 टी20 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया को मायूसी मिली जबकि 2017 में चैंपियंस ट्राफी के फाइनल में हार झेलनी पड़ी। इसके बाद भारत को 2019 वर्ल्ड वर्ल्ड कप से सेमीफाइनल में हार मिली जबकि इसके बाद 2021 में वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। वहीं इस साल 2022 में टी20 वर्ल्ड कप फाइनल में भारत को सेमीफाइनल मैच में हार के साथ अपने सफर का समापन करना पड़ा।

इंग्लैंड ने भारत का दूसरी बार टी20 विश्व चैंपियन बनने का तोड़ा सपना, कई पूर्व क्रिकेटर्स के टूटे दिल

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में इंग्लैंड ने भारत को 10 विकेट से हराया। इस टूर्नामेंट में टीम इंडिया ने पाकिस्तान को 4 विकेट से हराकर शानदार आगाज किया था। सुपर-12 मुकाबले में भारत को सिर्फ साउथ अफ्रीका के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। कई क्रिकेट फैंस को उम्मीद थी कि एक बार फिर टी20 वर्ल्ड कप में भारत का मुकाबला पाकिस्तान से होगा। टीम इंडिया को मिली 10 विकेट से करारी शिकस्त के बाद कई पूर्व क्रिकेटर्स ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए अपनी प्रतिक्रिया साझा की है। बता दें कि इस मैच में भी सलामी बल्लेबाज केएल राहुल का बल्ला खामोश रहा।

केएल राहुल शुरूआत में ही 5 रन बनाकर आउट हो गए और टीम दवाब में आ गई। रोहित शर्मा ने अच्छे शाट्स खेले, लेकिन वो भी 27 रन पर पवेलियन लौट गए। भारत ने 56 रन पर दो विकेट गंवा दिए और सारा दवाब कोहली पर आ गया जो चाहकर भी खुलकर नहीं खेल पाए।

केएल राहुल, रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या, रिषभ पंत (विकेटकीपर), अक्षर पटेल, रविचंद्रन अश्विन, भुवनेश्वर कुमार, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह।

रिहाई के बाद संजय राउत ने की उद्धव ठाकरे, शरद पवार से मुलाकात

कहा- किसी से नहीं कोई नाराजगी

मुंबई: शिवसेना नेता संजय राउत को आखिरकार जमानत मिल गई। उन्हें दो लाख रुपये के मुचलके पर जमानत मिली है। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) ने उन्हें 1 अगस्त को पात्रा चाल पुनर्विकास परियोजना से जुड़े मामले में गिरफ्तार किया था।

उन्होंने करीब 101 दिन या लगभग तीन महीने का वक्त जेल में रहकर बिताया है। हालांकि, उनकी जमानत की आदेश के खिलाफ इडी ने बाम्बे हाइकोर्ट का रूख किया, लेकिन अदालत ने संजय और प्रवीण राउत की रिहाई पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। जमानत पर रिहा हुए संजय राउत स्वाभाविक रूप से इस दिन बेहद खुश दिखाई दिए। उन्होंने हाथ जोड़कर न्यायाधीश एमजी देशपांडे से कहा कि मैं आपका आभारी हूं। इस पर उन्होंने जवाब दिया कि इसमें आभारी होने जैसा कुछ भी नहीं है। हम योग्यता के आधार पर सब कुछ तय करते हैं। योग्यता न होने की स्थिति में हम फैसला नहीं सुनाते हैं। उन्होंने जेल से बाहर आने के बाद अपनी कार्यक्रम सूची पर बात करते हुए कहा था, ह्यमैं उद्धव ठाकरे

से मिलूंगा, एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने भी मुझे बुलाया है। मेरी किसी से कोई शिकायत नहीं है। हमने राजनीति में ऐसा प्रतिशोध लेते हुए पहले भी देखा है। मैं किसी भी केंद्रीय जांच एजेंसी को दोषी नहीं ठहराता हूं। उन्होंने यह भी कहा था, ह्यमहाराष्ट्र में एक नई सरकार का गठन हुआ है। मैं उनके लिए कुछ बेहतरीन फैसलों का स्वागत करता हूं। उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कुछ अच्छे फैसले लिए हैं। हमें ऐसा लगता है कि यह राज्य वही चला रहे हैं, वही इसका नेतृत्व कर रहे हैं।

इसी के साथ सोशल मीडिया पर उद्धव ठाकरे व उनके परिवार व शरद पवार के साथ उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक संपादक – मुर्तुजा मामाजीवाला के द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, युनिट नं. 4, ग्राउंड फ्लोअर, एन. के इंडस्ट्रिअल इस्टेट , ऑफ आरे रोड , प्रवासी इंडस्ट्रिअल इस्टेट के पास , गेट नं. 2, गोरेगाव (पूर्व),मुंबई – 400063 से मुद्रित कर शिव वातुक सेना कासिम नगर नियर लक्ष्मी इस्टेट न्यू लिंक रोड, अंधेरी (प),मुंबई –400053 प्रकाशित। संपादक: मुर्तुजा मामाजीवाला मों. 9819199997
T.C. NO. MAHHIN10172 ईमेल: newsicon2021@gmail.com newsicon.net